

NORTH POINT SR. SEC. BOARDING SCHOOL.

जॉर्ज पंचम की नाक(4/7/2020)

Question 1.

‘जॉर्ज पंचम की नाक’ पाठ में देश की किन स्थितियों पर व्यंग्य किया गया है? पाठ के कथानक के आधार पर लिखिए। इस पाठ को पढ़कर आपको क्या प्रेरणा मिलती है? बताइए।

Answer:

‘जॉर्ज पंचम की नाक’ पाठ के माध्यम से देश की बदहाल विभिन्न स्थितियों पर व्यंग्य किया गया है। इसमें दर्शाया गया है कि अंग्रेजी हुकूमत से आज़ादी प्राप्त करने के बाद भी सत्ता से जुड़े लोग औपनिवेशिक दौर की मानसिकता के शिकार हैं। ‘नाक’ मान-सम्मान व प्रतिष्ठा का प्रतीक है, जबकि ‘कटी हुई नाक’ अपमान का प्रतीक है। जॉर्ज पंचम की नाक अर्थात् सम्मान एक साधारण भारतीय की नाक से भी छोटी (कम) है, फिर भी सरकारी अधिकारी उनकी नाक बचाने के लिए जी-जान से लगे रहे। अंत में किसी जीवित व्यक्ति की नाक काटकर जॉर्ज पंचम की नाक पर लगा दी गई। केवल दिखावे के लिए या दूसरों को खुश करने के लिए अपनों की इज्जत के साथ खिलवाड़ की जाती है। यह पूरी प्रक्रिया भारतीय जनता के आत्मसम्मान पर प्रहार दर्शाती है। इसमें सत्ता से जुड़े लोगों की मानसिकता पर व्यंग्य है।

इस पाठ से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि अपने राष्ट्र एवं समाज को भ्रष्टाचार मुक्त तथा तार्किक बनाना चाहिए। सरकारी प्रक्रियाओं को और अधिक पारदर्शी एवं ईमानदार बनाना चाहिए। किसी की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचानी चाहिए। अपने देश एवं देशवासियों के सम्मान की हमेशा रक्षा करनी चाहिए।

Question 2.

मूर्तिकार ने नाक लगाने के लिए क्या-क्या प्रयास किए? क्या आपकी दृष्टि से उसके द्वारा किए गए प्रयास उचित थे? यदि आप होते, तो क्या करते?

Answer:

जॉर्ज पंचम की लाट पर नाक पुनः लगाने के लिए मूर्तिकार ने निम्नलिखित प्रयत्न किए— सर्वप्रथम उसने जॉर्ज पंचम की नाक के निर्माण में प्रयुक्त पत्थर को खोजने का प्रयास किया, परंतु इस प्रयास में वह असफल रहा क्योंकि वह पत्थर विदेशी था। फिर उसने देशभर में घूम-घूम कर शहीद नेताओं की मूर्तियों की नाकों का नाप

लिया, ताकि उन मूर्तियों में से किसी एक की नाक को जॉर्ज पंचम की लाट पर लगाया जा सके, परंतु उसका यह प्रयास भी असफल रहा क्योंकि सभी मूर्तियों की नाकें आकार में बड़ी निकलीं। इसके पश्चात् उसने 1942 में बिहार सैक्रेटरियट के सामने शहीद हुए बच्चों की मूर्तियों की नाकों का नाप लिया, किंतु वे भी बड़ी निकलीं। अंत में उसने जिंदा नाक लगाने का निर्णय किया और जॉर्ज पंचम को जिंदा नाक लगा दी गई।

हमारी दृष्टि में मूर्तिकार के प्रयास उचित नहीं थे। वह कलाकार तो था, परंतु सही मायनों में पैसों का लालची था। वह सरकारी धन का भरपूर दुरुपयोग करना चाहता था। अंत में जिंदा नाक काट कर लगा देने की राय देकर वह कला के नाम का सरकार का जमकर शोषण करता है। यदि हम मूर्तिकार की जगह होते तो ऐसा कभी न करते। भारत के महान नेताओं एवं बालकों का सम्मान जॉर्ज पंचम से बढ़कर नहीं था, अतः उनकी नाक ऊँची है। जॉर्ज पंचम उनके समक्ष कहीं नहीं ठहरते। जिंदा नाक का महत्त्व तो और भी ज्यादा है। हम मूर्तिकार की तरह जॉर्ज पंचम को नाक लगाने का किसी भी प्रकार का कोई प्रयास न करते।

Question 3.

समाचार-पत्रों की जन-जागरण में क्या भूमिका होती है? 'जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

Answer:

समाचार-पत्र केवल सूचनाएँ या देश-विदेश के समाचार ही नहीं देते। जन-जागरण उत्पन्न करने में, लोगों को चेतना-सम्पन्न बनाने में, प्रत्येक क्षेत्र में हल-चल मचाने में समाचार-पत्र विशिष्ट भूमिका रखते हैं। 'जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ में रानी एलिज़ाबेथ की भारत आगमन की सूचना ही न केवल अखबारों द्वारा मिलती है, अपितु उनकी शाही तैयारियों की विस्तृत चर्चा भी मिलती है। रानी एलिज़ाबेथ के नौकरों, बावर्चियों, खान-सामों, अंगरक्षकों की पूरी-की-पूरी जीवनियाँ अखबारों में देखने को मिलती हैं। अखबार वाले सरकारी तंत्र के अनुकूल भी लिखते हैं और ऐसे कार्यों को छापने से भी बचते हैं, जिन कार्यों से सरकार की पोल खुलती हो। जिंदा नाक लगाने के शर्मनाक दिन कोई अखबार इस घटना को यथार्थ में छापकर अपनी साहसिक और ईमानदार छवि को प्रस्तुत न कर सका। अखबारों में केवल इतना छपा कि नाक का मसला हल हो गया है और राजपथ पर इंडिया गेट के पास वाली जॉर्ज पंचम की लाट के नाक लग गई है। उस दिन सभी अखबार खाली थे क्योंकि या तो उनके अंदर सरकार के कुकृत्यों को उजागर करने का साहस नहीं था या फिर जिंदा नाक लगाने का अखबार वालों ने मौन विरोध किया था। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि जन-जागरण में समाचार-पत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

Question 4.

रानी एलिज़ाबेथ के दर्ज़ी की परेशानी का क्या कारण था? उसकी परेशानी को आप किस तरह तर्कसंगत ठहराएंगे?

Answer:

इंग्लैंड की महारानी एलिज़ाबेथ को अपने पति के साथ भारत आना था। यह एक विशिष्ट बात थी। ब्रिटिश शासन उनके भव्य स्वागत की तैयारी में जुट गया था। ऐसे समय में एक ओर नई दिल्ली की कायापलट हो रही थी, तो दूसरी तरफ़ रानी की वेशभूषा को लेकर दर्ज़ी की परेशानी बनी हुई थी। वह इस बात से परेशान था कि भारत, पाकिस्तान और नेपाल यात्रा के समय रानी किस अवसर पर क्या पहनेगी? उसकी परेशानी तर्कसंगत थी क्योंकि रानी इस यात्रा में अपने देश का प्रतिनिधित्व कर रही थीं और उनके कपड़ों का उनकी मर्यादा के अनुकूल होना ज़रूरी था।

Question 5

जॉर्ज पंचम की नाक लगने वाली ख़बर के दिन अखबार चुप क्यों थे?

Answer:

जॉर्ज पंचम के बुत पर जिस दिन जिंदा नाक लगाई गई उस दिन अखबार वाले चुप थे। वास्तव में वे लज्जित थे क्योंकि जिस जॉर्ज पंचम की तुलना छोटे बच्चे से भी न की जा सके और जिसके अत्याचार का इतिहास भी अभी तक भूले नहीं थे, उस जॉर्ज पंचम की लाट पर अपने सम्मान की नाक कटवा कर जिंदा नाक फिट की गई। यह कृत्य बहुत ही शर्मिंदगी से परिपूर्ण था। यह दिन भारतीयों के आत्मसम्मान पर चोट पहुँचाने वाला था, इसलिए सभी अखबार चुप थे।

Question 6

‘जॉर्ज पंचम की नाक’ पाठ में सरकारी तंत्र का मज़ाक उड़ाया गया है— कैसे?

Answer:

‘जॉर्ज पंचम की नामक’ पाठ में सरकारी तंत्र का मज़ाक उड़ाया गया है। पाठ में सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नामक को लेकर जो चिंता दर्शाई गई है, वह उनकी गुलाम और औपनिवेशिक मानसिकता को दर्शाती है। भारत को गुलाम बनाकर रखने वाले राजा का सम्मान और रानी को प्रसन्न करने के लिए परेशान सरकारी तंत्र स्वतंत्र होकर भी मानसिक रूप से गुलाम दिखाई देता है, जिसे राष्ट्र के सम्मान की थोड़ी भी चिंता नहीं है। इतनी ही नहीं सरकारी तंत्र किसी भी कार्य के पहले से जागरूक नहीं है। वह मौका आने पर जागृत होता है। मीटिंग बुलाना, मशवरा करना, ज़िम्मेदारी एक-दूसरे पर डालना, दिखावटी चिंता करना, चापलूसी करना—ये सब सरकारी तंत्र का मज़ाक ही है।

Question 7.

नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी सरकारी तंत्र में दिखाई देती है, वह उनकी किस मानसिकता को दर्शाती है?

Answer:

सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है, वह उनकी गुलाम और औपनिवेशिक मानसिकता को दर्शाती है। सरकारी तंत्र जॉर्ज पंचम की नाक को लेकर चिंतित है, जिसने न जाने कितने कहर ढहाए। सरकारी तंत्र उसके अत्याचारों को याद न कर उसके सम्मान में जुट जाता है। भारत को गुलाम बनाकर रखने वाले राजा के सम्मान और रानी को प्रसन्न करने के लिए परेशान हमारा प्रशासन मानसिक रूप से गुलाम लगता है। जिसे राष्ट्र के सम्मान की थोड़ी भी चिंता नहीं है। इस तरह सरकारी तंत्र अपनी अयोग्यता, अदूरदर्शिता, और मूर्खता को दर्शाता है।

Question 8

नाक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा का द्योतक है। यह बात पूरी व्यंग्य रचना में किस तरह उभरकर आई है?

Answer:

नाक मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा का द्योतक है। नाक का स्थान सर्वोपरि माना जाता है। नाक को विषय बनाकर लेखक ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारी सरकारी व्यवस्था एवं हुक्मरानों की औपनिवेशिक एवं गुलाम मानसिकता पर व्यंग्य किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी भारत में जगह-जगह अंग्रेजी शासकों की मूर्तियाँ विद्यमान हैं जो हमारी गुलामी या परतंत्र मानसिकता को दर्शाती हैं।

आज भी जॉर्ज पंचम जैसे अंग्रेजों की मूर्ति की नाक रहने दी जाए या हटा दी जाए— का मसला सरकारी महकमों की रातों की नींद उड़ा सकता है। इसी प्रकार देश के शहीदों के सम्मान के लिए 'नाक' शब्द का प्रयोग हुआ है। उनकी नाक को जॉर्ज पंचम की नाक से बड़ा बताया गया है लेकिन अंत में जॉर्ज पंचम की नाक स्थापित करने के लिए एक ज़िंदा नाक लगा दी जाती है यानि ऐसी नाक जो कतई पत्थर की नहीं लगती। अर्थात् देश के सम्मान की बलि दे दी जाती है। इस प्रकार पूरी व्यंग्य रचना में नाक मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा का द्योतक है।

Question 9

‘जॉर्ज पंचम की नाक’ पाठ के आधार पर सरकारी तंत्र की कार्यप्रणाली पर प्रकाश डालिए।

Answer:

‘जार्ज पंचम की नाक’ पाठ में उस समय की संकीर्ण सरकारी तंत्र की कार्यप्रणाली को दर्शाया गया है, जो परतंत्र मानसिकता से ग्रस्त है। किसी भी कार्य के प्रति सरकारी तंत्र जागरूक नहीं है। जब अवसर आता है, तब उनकी निद्रा खुलती है। सरकारी कार्यप्रणाली में मीटिंगें प्रमुख हैं। हर छोटी-से-छोटी बात पर मीटिंग बुलाई जाती है जिसमें परामर्श तो होता है, परंतु क्रियाशीलता नहीं। सभी विभाग एक-दूसरे पर कार्य आरोपण करते रहते हैं। व्यर्थ का दिखावटीपन, चिंता, चापलूसी की प्रवृत्ति पूरी कार्यप्रणाली में भरी हुई है। पाठ में रानी एलिज़ाबेथ के भारत आने पर सभी अपना काम-काज छोड़कर उनकी तैयारी और स्वागत में संपूर्ण सरकारी तंत्र लग जाता है और जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर चिंता और बदहवासी दिखाई देती है। संपूर्ण पाठ में सरकारी तंत्र अपनी अयोग्यता, अदूरदर्शिता, चाटुकारिता और मूर्खता को दर्शाता रहता है।

Question 10.

‘जार्ज पंचम की नाक’ पाठ को दृष्टि में रखकर बताइए कि लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि ‘नई दिल्ली में सब था... सिर्फ नाक नहीं थी।’

Answer:

इस कथन के द्वारा यह भाव प्रकट किया है कि भारतीयों ने स्वतंत्रता तो प्राप्त कर ली, लेकिन मानसिक रूप से पराधीन बने रहे। अंग्रेज़ व अंग्रेज़ी भाषा के आगे वे स्वयं को निम्न समझते। उनमें वह आत्मसम्मान, निर्भरता, स्वाभिमान, निर्भयता नहीं थी जो एक स्वतंत्र देश के नागरिक में होती है। वे अब भी हीनता के शिकार थे।

1